समाज के लिए अभिशाप हैं बाल अपचारी

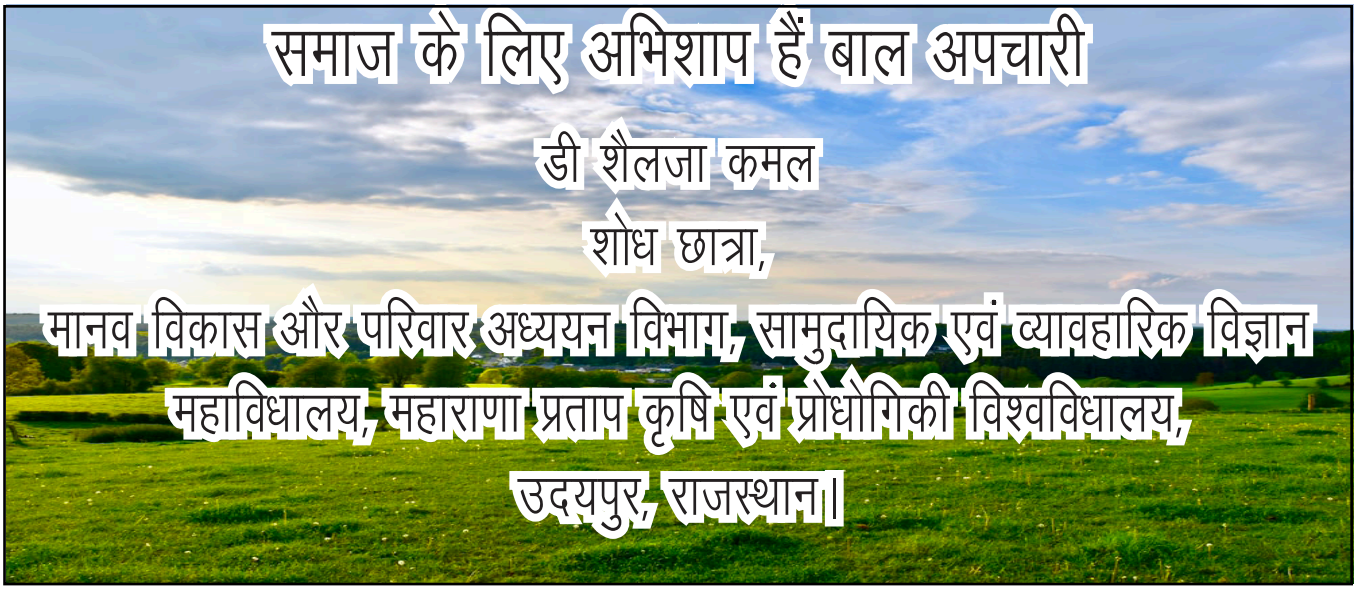

डी शैलजा कमल
शोध छात्रा,
मानव विकास और परिवार अध्ययन विभाग, सामुदायिक एवं व्यावहारिक विज्ञान महाविधालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रोधोगिकी विश्वविधालय, उदयपुर, राजस्थान।

बाल अपचारी एक जटिल सामाजिक समस्या है जो समाज के सभी सदस्यों और सामाजिक संरचना की प्रक्रियाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। अपराध व्यवहार के एक समूह को संदर्भित करता है जो सामूहिक प्रथाओं औरध्या प्रमुख सामाजिक समूह की नैतिकता के अनुरूप नहीं है। अनिवार्य रूप से, ये व्यवहार सामाजिक मानदंडों से विचलित होते हैं और अधिक विशेष रूप से वे स्थापित आपराधिक संहिताओं और कानूनों का उल्लंघन करते हैं।

वैश्विक स्तर पर अपराध करने के तरीके बदल रहे हैं। अपराधी संख्या में बढ़ रहे हैं, युवा शामिल हो रहे हैं और हिंसक अपराध अधिक आम होते जा रहे हैं। इसके अलावा, हमारे जीवन, दुनिया के बारे में हमारे विचार और अपराध के बारे में जानने के हमारे तरीकों में अपराध के बदलते तरीके के साथ काफी बदलाव आया है। इस तरह की हिंसा की जड़ों को स्पष्ट रूप से नहीं समझा जा सकता है, लेकिन आय और काम के अवसरों में गिरावट, और विशेष रूप से बालकों के लिए परिणामी निराशा महत्वपूर्ण कारक हैं।

क्या है बाल अपचारी?

एक बच्चा एक अपराधी के रूप में जाना जाता है जब वह गलती करता है जो कानून के खिलाफ है और जिसे समाज द्व ारा स्वीकार नहीं किया जाता है। इस प्रकार एक ''किशोर'' या ''बच्चा'' का अर्थ उस व्यक्ति से है जिसने अठारह वर्ष की आयु पूरी नहीं की है और कानून का उल्लंघन करता है और परिपक्वता की कानूनी उम्र के तहत अपराध करता है।

बाल अपचारी के कारण क्या हैं?

बाल अपराध के कारणों के लिए हमें एक जैविक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक और संस्थागत परिप्रेक्ष्य लेने की जरूरत है। बाल अपराध के लिए शारीरिक विकार, मनोवैज्ञानिक असंतुलन, गरीबी, सामाजिक विकार, प्रतिकूल जलवायु, उचित परामर्श की कमी आदि जिम्मेदार हैं। मोबाइल और इंटरनेट की अत्यधिक लत, सामाजिक मूल्यों का क्षरण, खेल के मैदान की कमी, सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव, पारिवारिक जागरूकता की कमी, शुद्ध मनोरंजन की कमी, यांत्रिक शहरी जीवन, बच्चों और माता–पिता के बीच संबंधों का बिगड़ना बाल अपराध के पीछे एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

दूसरी ओर, समाजीकरण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पहलू और अपराध का कारण माता–पिता और बच्चे के बीच बातचीत की गुणवत्ता और प्रक्रिया है। यदि संचार किसी भी बिंदु पर टूट जाता है, तो यह अपराधी व्यवहार को जन्म दे सकता है। इसके अलावा, एक इकाई के रूप में परिवार की अनुपस्थिति बचपन और बच्चों के सामाजिककरण को प्रभावित कर सकती है। जहां परिवार विफल हो जाता है, अन्य सामाजिककरण एजेंसियां एक बच्चे के जीवन में बढ़ती भूमिका निभाएंगी।

बाल अपराध का महत्वपूर्ण कारक निष्क्रिय परिवारों की बढ़ती संख्या भी है। एकल माता–पिता के घरों के युवाओं के लिए बाल अपराध दर सामान्य रूप से काम करने वाले परिवारों की तुलना में दोगुनी है। एकल–माता–पिता परिवारों में बच्चों की कम देखभाल की जाती है और इस प्रकार उनमें उपेक्षित, भेदभाव और पृथक होने की भावनाएँ होती हैं। माता–पिता के प्यार की कमी उन्हें समाज के प्रति शत्रुतापूर्ण और निंदक बनाती है

क्या हैं बाल अपचारी के प्रभाव?

बाल अपराध एक बड़ी समस्या है जो न केवल अपराधियों के पीड़ितों को प्रभा.

वित करती है, बल्कि यह बाल अपराधियों को स्वयं, उनके परिवार और यहां तक कि समग्र रूप से समाज को भी प्रभावित करती है। बाल अपराधी स्वयं पर अपने अपराधों के प्रभाव का अनुमान लगाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, लेकिन, जैसा कि कहा गया है, वे इन अपराधों से गंभीर रूप से प्रभावित हैं।

कैसे समाज बाल अपचारी को प्रभावित करता है?

बाल अपराध एक जटिल सामाजिक समस्या है जो समाज के सभी सदस्यों और सामाजिक संरचना की प्रक्रियाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। अपराध बाल सामाजिक रीति–रिवाज, धर्म, मूल्य, सामाजिक अनुशासन, अच्छाई और बुराई का विचार समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से बच्चों और किशोरों में पैदा होता है।

बच्चों को समाज के नियमों के अनुसार व्यवहार करना सिखाया जाता है और उन्हें अच्छे नागरिक के रूप में विकसित किया जाता है। बाल अपराध को समाज और राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त मान. दंडों और विनियमों द्वारा नियंत्रित करने की आवश्यकता है।

कैसे परिवार बाल अपचारी को प्रभावित करता है?

इनमें माता–पिता का दृष्टिकोण, पा. रिवारिक सामंजस्य का स्तर शारीरिक हिंसा और बिना माता–पिता का पालन–पोषण और गैर–पारिवारिक कारक भी शामिल हैं जो बाल अपराध को प्रभा. वित करते हैं, जिसमें किशोर न्याय प्रणाली की विफलता, गरीबी, शिक्षा तक पहुंच की कमी, नशीली दवाओं के दुरुपयोग और आनुवंशिक समस्याएं शामिल हैं।

कैसे समुदाय बाल अपचारी को प्रभावित करता है?

बढ़ते अपराध का सामाजिक ताने–बाने या समुदाय के सदस्यों के बीच पारस्परिक संबंधों पर आकस्मिक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि अपराध भय पैदा करता है। जितना अधिक लोग अपराध के प्रति जागरूक होते हैं, उतना ही वे अपराध का शिकार होने से डरते हैं। बाल अपराध यौन व्यवहार, नशीली दवाओं के उपयोग, गिरोह की भागीदारी आदि से निकटता से संबंधित है। इन सभी का समुदाय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि वे समुदाय को असुरक्षित बनाते हैं।

कैसे करें बाल अपचारी की रोकथाम?

बालकों में अपराधी व्यवहार में पारिवारिक प्रभाव के योगदान के कारण, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि परिवार बच्चों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करें। यह सुनिश्चित करने के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है कि परिवार में मजबूत भावनात्मक बंधन है, और संचार के लिए प्रभावी रणनीतियां तैयार करना।

ऐसे परिवारों से पाले जा रहे बच्चे जो पारंपरिक परिवार के अनुरूप नहीं हैं, उन्हें विशेष रूप से अपराधी व्यवहार के विकास को रोकने के लिए बारीकी से देखा जाना चाहिए। स्कूलों को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि माता–पिता द्वारा छोड़े गए अंतराल को भरने के लिए वे बच्चों की पृष्ठभूमि को जानते हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षक उस बच्चे को सलाह देने में मदद कर सकते हैं जो घर पर हिंसा का गवाह है, या एक बच्चा जिसके माता–पिता अपराधी हैं।

माता–पिता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपने बच्चों की संगति की बारीकी से निगरानी करें। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके बच्चे उत्पादक सामाजिक गतिविधियों में संलग्न हों। इससे उनके बच्चों के अपराधी बनने की संभावना को कम करने में मदद मिलेगी।

निष्कर्ष

यदि बाल अपराध की जड़ों को नहीं हटाया गया तो यह भयानक रूप धारण कर लेगा। बाल अपराध को नियंत्रित करने के लिए कुछ बहुत प्रभावी कदम उठाए जाने की जरूरत है। उचित परामर्श, नैतिक विकास, पारिवारिक बंधन, उचित शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, स्वस्थ मनोरंजन, खेल और व्यायाम, देशभक्ति की शिक्षा और उचित समाजीकरण किशोर अपराध को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह अपराध कम हो सकता है यदि समाज बालकों के बीच सही मूल्यों का निर्माण कर सके। हमें कम उम्र से ही बालकों में समाज सेवा की मानसिकता विकसित करनी होगी।

बालकों के मनोवैज्ञानिक विक. ास के लिए माता–पिता को समय देना चाहिए और उनसे अच्छे से बात करनी चाहिए। माता–पिता को चाहिए कि वे अपने बालकों की छोटी–छोटी जरूरतों पर ध्यान दें। बालकों के बीच मूल्यों और नैतिकता के निर्माण में शैक्षणिक संस्थानों की प्रमुख भूमिका होती है। नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाना और प्रत्येक शिक्षण संस्थान में परामर्श देना अनिवार्य है।

हमें बालकों को कम उम्र से ही तरह–तरह की किताबें पढ़ने की आदत डालनी होगी। बाल अपराध को केवल सजा से नियंत्रित नहीं किया जा सकता हैय बल्कि सबसे महत्वपूर्ण बात उनके व्यवहार को ठीक करना है।